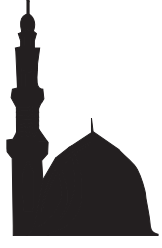
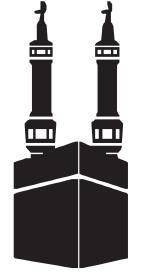


नमाज़ की फ़ज़ील व अहमियत और नमाज़ छोड़ने पर वईद

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ



أَقِیْبُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ ﴿۳۱﴾ (الروم)



(क़ायम रखो नमाज़ और मत हो शिर्क करने वालों में से)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद (रज़ि०) कहते हैं कि मैं हुज़ूर अक़दस (स.अ.व.) से दरयाफ़्त किया कि अल्लाह तआला शानहू के यहाँ सबसे ज़्यादा महबूब अमल कौनसा है? इरशाद फ़रमाया कि नमाज़, मैंने अर्ज़ किया कि इसके बाद कौनसा है? इरशाद फ़रमाया कि माँ-बाप के साथ हुस्ने-सुलूक, मैंने कहा कि इसके बाद कौनसा है? इरशाद फ़रमाया : जिहादा मुल्ला अली क़ारी (रह०) कहते हैं कि इस हदीस में उल्मा के इस क़ौल की दलील है कि ईमान के बाद सबसे मुक़द्दम नमाज़ है। इसकी ताईद इस हदीस सही से भी होती है, जिसमें इरशाद है, यानी बेहतरीन अमल जो अल्लाह तआला ने बन्दों के लिए मुकरर किया है वह नमाज़ है। (फ़ज़ाइल-ए-नमाज़ पृष्ठ 204)

क़ामिल नमाज़ गुनाहों से पाक-साफ़ कर देती है

हुज़ूर अक़दस (स.अ.व.) का इरशाद है कि जो शख्स नमाज़ अपने वक़्त पर पढ़े, वुजू भी अच्छी तरह करे, खुशू-खुजू से भी पढ़े, खड़ा भी पूरे वक़ार के साथ हो, फिर इसी तरह रुकू-सज्दा भी अच्छी तरह से इतमीनान से करे, ग़रज़ हर चीज़ को अच्छी तरह अदा करे तो वह नमाज़ निहायत रौशन चमकदार बन कर जाती है और नमाज़ी को दुआ देती है कि अल्लाह तआला शानहू तेरी भी ऐसी ही हिफ़ाज़त करे जैसे तूने मेरी हिफ़ाज़त की। और जो शख्स नमाज़ को बुरी तरह पढ़े, वक़्त भी टाल दे, वुजू भी अच्छी तरह न करे, रुकू-सज्दा भी अच्छी तरह न करे तो वह नमाज़ बुरी सूरत से, काले रंग में बद्-दुआ देती हुई जाती है कि अल्लाह तुझे भी ऐसा ही बर्बाद करे जैसा तूने मुझे बर्बाद किया। इसके बाद वह नमाज़ पुराने कपड़े की तरह से लपेट कर नमाज़ी के मुंह पर मार दी जाती है। (तिबरानी, दुर्रे-मनसूर)

नमाज़ी के हर-हर हिस्सा-ए-जिस्म के गुनाहों की मज़ाफ़ी

अबू मुस्लिम (रह०) कहते हैं कि मैं हज़रत अबू उमामह (रज़ि०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, वह मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे, मैंने अर्ज़ किया कि मुझसे एक साहब ने आपकी तरफ़ से यह हदीस नक़ल की है कि आपने नबी करीम (स.अ.व.) से यह इरशाद सुना है : कि जो शख्स अच्छी तरह वुजू करे और फिर फ़र्ज़ नमाज़ पढ़े, हक़-तआला शानहू उस दिन वह गुनाह जो चलने से हुए हों और वह गुनाह जिनको उसके हाथों ने किया हो और वह गुनाह जो उसके कानों से सादिर हुए हों और वह गुनाह जिनको उसने आँखों से किया हो और वह गुनाह जो उसके दिल में पैदा हुए हों, सबको मज़ाफ़ फ़रमा देते हैं। हज़रत अबू उमामह (रज़ि०) ने कहा कि मैंने यह मज़मून नबी करीम (स.अ.व.) से कई बार सुना है। (रवाहु अहमद)

नमाज़ की बरकतें

इब्ने हजर (रह०) ने अल-मुनबिहात में हज़रत उसमान (रज़ि०) से रिवायत नक़ल की है कि जो शख्स औक़ात की पाबंदी के साथ नमाज़ अदा करता है, अल्लाह तआला नौ चीज़ों से उस का इकराम फ़रमाते हैं : (१) उसको अपना महबूब बना लेते हैं। (२) उसको तंदुरुस्ती अता करते हैं। (३) फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त करते हैं। (४) उसके घर में बरकत अता करते हैं। (५) उसके चेहरे पर सुलहा का नूर ज़ाहिर होता है। (६) उसका दिल नर्म फ़रमा देते हैं। (७) हश्र के मैदान में इसको पुलसिरात से बिजली की तरह तेज़ी से गुज़ार देंगे। (८) दोज़ख़ से नजात अता फ़रमाएंगे। (९) जन्नत में नेक साथी अता करेंगे।

(नमाज़ के मसाइल का इंसाइकलोपीडिया जिल्द: १ पेज ४४)

नमाज़ छोड़ने वाले का अंजाम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) बयान फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर अक़दस (स.अ.व.) ने नमाज़ का ज़िक्र किया और फ़रमाया कि जो शख्स नमाज़ का एहतिमाम करे, तो नमाज़ उसके लिए क़यामत के दिन नूर होगी और हिसाब पेश होने के वक़्त दलील होगी और नजात का सबब होगी, और जो शख्स नमाज़ का एहतिमाम न करे इसके लिए क़यामत के दिन न नूर होगा और न उसके पास कोई दलील होगी और न नजात का कोई ज़रिया। इसका हश्र फिरऔन, हामान और उबइ-बन-ख़लफ़ के साथ होगा। (अहमद, इब्ने-हिब्बान दुर्रे-मनसूर लिस्सुयूती) हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (स.अ.व.) ने इरशाद फ़रमाया कि जिसने जानबूझकर नमाज़ छोड़ा इसका नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाता है जिससे वह जहन्नम में दाख़िल होगा। (मकाशिफ़तुल-कुलूब) एक हदीस में है कि क़यामत के दिन बेनमाज़ी के हाथ बंधे होंगे, फ़रिश्ते मुंह और पीठ पर डंडे लगा रहे होंगे, जन्नत कहेगी मेरा तेरा कोई संबंध नहीं, न मैं तेरे लिए न तू मेरे लिए। जहन्नम कहेगी कि आज मेरे पास, मैं तेरे लिए और तू मेरे लिए। एक हदीस में है कि जहन्नम में एक घाटी 'लम-लम' है जिसमें बिच्छू और साँप होंगे, उनकी लंबाई एक महीने की दूरी के बराबर होगी। इस घाटी में बेनमाज़ी को अज़ाब दिया जाएगा। एक हदीस में है कि जहन्नम में एक घाटी है जो बिच्छुओं का घर कहलाता है हर बिच्छू खच्चरों के बराबर होगा इसमें बेनमाज़ी को अज़ाब दिया जाएगा। (नमाज़ के मसाइल का इंसाइकलोपीडिया जिल्द: १ पेज ४६)

मिनजानिब : हाशमी दवारवाना, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, पीस ऑलवेज़ (रज़ि.)